Item Code: 645 തിയ്യതി.................... Participant Code: 038

Rough

नारियाँ ____ नौकरी क्षेत्रों में ।

रूपरेखा – प्रस्तावना
नारियों की कल्पना
स्थान यह भी है "स्त्रीयों" का
"समसयाएँ"
तुम आगे बढ़ो हम तुम्हारे साथ हैं ।
नौकरीयों की क्षेत्र में ।
"शमस्याएँ का हल"
संहसार ।

प्रस्तावना – आज हम 2026 में जी रहे हैं । और एक वक्त था, हम जब कुछ चीजों को पाप मानते थे । ~~हैं~~ शायद आप लोगों को शीर्षक से समझा आ ही गया होगा ~~कि~~ मैं अपनी किस विषय पर समझाने की कोशिश करेंगी और हम क्या बात करेंगे ।

मैं यह 17 | 1 | 2026 को यह एक उपन्यास लिख रही हूँ ।

पर मेरी सोच इतनी पीछे जा चुकी है कि, मैं सोचने पे मजबुर हुँ कि नारियाँ इतनी ताकतवर और साहसपूर्ण कैसे होती है।

"छोरियाँ छोरो से कम है के"!

पंजाबी में यह बोला गया एक वाक्य शायद इस दुनिया को सोच बदल देगी किसी ने यह सोचा तो नहीं था, पर यह मुमकिन छोरियों ने करके दिखाया है, सिर्फ और सिर्फ अपने दम पर! और यही ताकत हमें आने वाले कल में भी चाहिए।

अब तो आप लोगों को समझ पूरी आ गई होगी कि, हम किस विषय पर चर्चा करेंगे। हम आज से पीछे सन् 1900 में चलते हैं, मुझे पूरी जानकारी बताते है कि, किस महान स्त्री ने यह कदम उठाया था, वो कोई और नहीं एक रानी थी, जो पहली बार स्त्री को शिक्षा देने की सोच निकाली थी। और उसके पीछे

का दर्द, सिर्फ और सिर्फ वही समझ सकती है। जब वह विद्यालय स्त्रीयाँ को पढ़ाने जाती थी, तब उनपे कीचड़ फेका जाता था, और यह कहा जाता था, कि तुम पाप कर रही हो। वह जब भी घर से बाहर निकलती थी, विद्यालय के लिए साथ- साथ एक साड़ी भी लेकर चलती थी, कि अगर वह गंदी हो गई, कीचड़ की वजह से तो वह उसको पहन कर बच्चों को पढ़ा सके और पूर्ण शिक्षा दे सके। आप के मन में एक प्रश्न तो जरूर आया होगा की, उन्हें शिक्षा की जानकारी प्राप्त कैसे हुई?। तो जो उनके राजा थे, वह उनके साथ खड़े थे, इस युद्ध में, और उन्होंने ही रानी को शिक्षा प्राप्त करवाई थी। पर ऐसा अत्याचार सिर्फ नारियों के साथ क्यूँ था?। इसका जवाब फिर मेरे पास भी नही है। मर्द लोगों को ऐसा लगता था, कि औरतें सिर्फ रसोई घर संभाल ने के बनी हैं, और इस घटिया सोच की वजह से आप भी यह सोचते हैं, कि आखिर औरते करी करेगी तो करेंगी क्या? शिक्षा प्राप्त करके। बाद में तो रसोई घर ही देखना है।

• नारियों की कल्पना - सन् 1945 आजादी के बाद भारत में बहुत बदलाव हुआ है। सम्पूर्ण देश तो है ही हमारा भारत, पर उस समय औरतों को पढ़ने की इज़ाज़त हो थी। पर सिर्फ 12वीं तक और उसके बाद शादी और कहानी फिर से रसोई घर तक ही आ जाती है। ऐसा होता है क्यों? जैसे हम ही घर और परिवार, रिश्तदार सबको समेट कर रहते हैं। वैसे ही हम इस धरती को भी ऐसा कर कर, अच्छे से रख सकते हैं। जैसा कभी दुनिया, ऐसा किसी ने भी नहीं देखा होगा। हाँ, हमारी कल्पना से याद आया कि सन् 2005 के आस-पास हमारी कल्पना चावला भारत की सबसे पहली अंतरीक्ष पर जानेवाली महिला हैं, वो।

हमें अगर मौका मिला तो, हम भीं कुछ कर सकते हैं, किसी पर आत्मनिर्भर हो कर रहना किसी को थोड़ा ना भाय! हमारी कल्पना करते-करते हम कुछ कर सकते, हम उड़ सकते हैं।

64th Kerala School Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur
Item Code: 645 Participant Code: 038

जैसे, हमारी भारत की पहली आकाश वाणी भरने वाली, पॉचलेट बन कर, सब को बता देने वाली की हम लड़को से कम नहीं है, और उड़ने की क्या बात हम रिकॉर्ड भी बना सकते है, उनका महान भी वो, वह है गुन्जन सॅक्सेना।

पहली भारतीय पार्टी में संयोग देने वाली इंदिरा गाँधी, वह भी एक नारी ही है न, और हाँ, आज भी 2026 में हमारी राष्ट्रपति, श्रीमती मुरमुर जी, वह भी एक औरत ही है।

अगर सपना देखना और उसको कर दिखाने का शौक है तो, हमारी भारत की स्त्रीयों से पूछो कि हम कितने लोगों से लड़ कर यहाँ तक पहुँचे होते है। भारत की पहली, डॉक्टर, इन्जीनियर, कमप्यूटर, विज्ञान, सब चीजों में हम लोगों ने अपने कदम बढ़ा चुके है। और अब यह कदम कभी भी पीछे बढ़ने से रहे।

और हमारी सोच किसी को नीचा दिखाना या किसी को बुरा बताना। हम इसलिए कामयाब नहीं होना चाहते। हम बस अपने पैरों पर खड़े होना चाहते है। और

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

पूरी दुनिया को दिखा देना चाहते कि सच में हम किसी कम नहीं ।

• ध्यान यह भी है 'स्त्रीयों' का - आपने अभी फिलहाल यह क्रिकेट के मैच में डाब्लू. सी.सी में लड़कियों कि टीम ने इस बार क्रिकेट जीत चुकी है । मैं आपकी जानकारी के लिए बता दूँ कि उस टीम में पूरे ॥ खिलाड़ी होते हैं । और ॥ के ॥ खिलाड़ीयाँ कि अपनी-अपनी एक कहानी है । एक लड़कि ने अपने बाल कटवाँ लिया क्योंकि वह लड़को के जैसे लड़े और लड़को के साथ क्रिकेट खेल सके स्थके और आज उसका बाल कटवाना खाली नहीं गया । जब क्रिकेट जीत जाने के बाद सिर्फ मन-ही-मन सबके एक ही था, कि छोटा ट्रोफी लाएँ, या छोटी बात तो एक ही हुई । यह सोच बदल चुकी है । किसी ने सोचा ही नहीं होगा कि क्रिकेट, दौड़ने, कुदने में रिकॉर्ड तोड़ने में कभी लड़कियाँ आगे निकल जाएगी और अपने सारे-के-सारे सपने पूर्ण करके अपनी

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ തൃശ്ശൂർ
തിയ്യതി....................

सारी खुशियाँ अपने माता-पिता के लिए सिर्फ और सिर्फ कर रही होगी। कुछ स्थान सिर्फ और सिर्फ लड़के ही कर सकते है, यह बोलने वाले लोग ~~सोच~~ सोचते है कि आखिर यह कैसे हो सकता है। कुछ चीजें खुदा की देन होती है। उपर वाला हमारी तकदीर बना कर भेजता इस दुनिया में और उसको हम मनुष्य कभी बदल नहीं सकते कोई भी कीमत पर " एक स्थान वह दोनों का हो सकता है। वह चाहे लड़का हो या फिर लड़की।

- समस्याएँ - घर के ताने
  समाज का डर
  खुद पर आत्मविश्वास न होना।
- समस्याएँ का हल - घर के ताने, - मेरी माने तो यह ताने ~~एक~~ जहरीली पदार्थ ~~कि~~ तरह काम करता है,। दो कारण होगें, या तो माँ समझती नही या फिर पापा को टेंशन है कि मैं अगर इसको ऐसे पढाऊँगा तो दहेज कैसे भरूँगा।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

इन दोनो मुसिबत का हल है मेरे पास अगर माँ को कुछ समझ नही आता तो आपको धैर्य रखना होगा, कि वह उन्हें इसलिए लगता है कि उनके माता-पिता ने उनके साथ ऐसा ही हमेशा व्यवहार किया है। तो आपकी माता को लगता है कि मैं इसको कैसे यह जी बताऊँ, इसलिए थोड़ा सा धैर्य रखीए। अगर बात हमें पिताजी की करें तो, हमें उनसे निवेदन है कि जो दहेज के बारे में वह सोच रहें है, उस दहेज के पैसों से उसे पढ़ा कर आप उसको खुद पर आत्मनिर्भर कर सकते है।

- समाज का डर - चार लोग क्या कहेंगे ये सोच कर अगर आप लड़कियाँ रह गई। फिर तो आप कुछ न ही करो रसोई घर संभालो मेरा यही कहना। अगर हम कभी कामयाब हो गए तो वही चार लोग आ कर पूछेंगें कि वाह बेटी, तुमने ऐसा कर लिए, मुझे पहले ही पता था कि तुम यह लोगी, पर पीठ पीछे कुछ और ही कहेंगी।

इसलिए मेरा यही कहना है कि चार लोग क्या कहेंगे यह सोच कर आप अपनी जिंदगी क्यों बर्बाद कर रहे हैं।

- खुद पर आत्मविश्वास न होना? — यह सबसे बड़ी समस्याएँ है हम औरतों की।

बचपन से हमें लाड़ प्यार में रखा जाता है, और इस कारण हमें, हम कौन है। यह एक सवाल करना हम खुद से हमेशा भूल जाते हैं। किसी पर आत्मनिर्भर रहना यही हमें सिखाया जाता है। बचपन में पिता की बोझ और शादी के बाद पति पर, यह प्रक्रिया सबसे बकवास है, हमें भी यह बोलो की जाव जा कर चार पैसे कमा कर लाओ। बस इस रसोई और घर को संभाल ते - संभालते हमारी उमर गुजर गएगी। इस लिए खुद पर आत्मविश्वास होना बहुत जरूरी है। अपने पैरों को कमजोर करो बर्बाद नहीं, खुद पर विश्वास भी रखो।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2026 ജനുവരി 14 - 18 - തൃശ്ശൂർ
64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി.................... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി തൃശ്ശൂർ

Item Code: 645 Participant Code: 038

• नौकरीयों की क्षेत्र में — आज 2026 तक में मैंने बहुत बदलाव देखे हैं। बहुत कुछ सिखा और सिखाया भी है। और लड़कियाँ कोई मजबूरी या किसी के खौफ नौकरीयाँ करती है ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। पहले के लोग कहते थे कि हम अपने बहु-बेटियों से नौकरियाँ नही करवाते और ना हिं उनकी कमाई खाते है। तो मेरा उन लोगों से सवाल है। जब वह अपनी बहु-बेटियों से काम करवाते ही नही चाहते तो वह घर के काम क्यों करवाते है। वह भी तो काम और ना हि उनके पैसे मिलते हैं। ना हि कोई शाबाशी और ना हि कोई खुशी फिर वह क्यों करे आप के घर के काम?
आज के क्षेत्र में लड़का लड़की में कोई फर्क नहीं है, यह सिर्फ आपको लड़का है और हमें यह कह दिया जाता कि लड़के जो है न वह लोहा और हम लड़कियाँ हीरा है हीरा, और सच कहुँ तो कड़वा जरूर लगेगा। अगर कुहिनूर हीरा न

होता तो वह अभी भारत में ही रहता। कोई पूछता नहीं उसको, वह हीरा था इसलिए उसको चुरा कर अंग्रेज ले गए। वैसे हम लड़कियाँ हैं एक हीरा।

यह तो बस एक कहावत है सच बात तो यह है कि मर्द जात कभी चाहते ही नहीं है कि वह औरते मर्द से आगे बढ़े। लड़कियाँ सुरक्षित नहीं है, तो आप यह सोचे ना इन लड़कों कि वजह से ही सुरक्षित नहीं। लड़कियाँ छोटे कपड़े नहीं पहनती हैं। अगर हम साड़ी भी पहन कर जाए तो नीचे सोच वाले हमें साड़ी में भी घूमते हैं। समाज घटीया लड़कियाँ नहीं। लड़कियों को अपने आप पर घमंड नहीं होता कि मैं तो कमा रखी हूँ, खुद कि पैसो से जी रही हूँ। हमें बस आत्मनिर्भर होना होता है। आज के जमाने में नारियाँ सिर्फ नारियाँ नहीं। एक समूह है जो मिल कर बनता है।

नारी शक्ति !!

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 64-ാമത് പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

• तुम आगे बढ़ो हम तुम्हारे साथ – यह नारा लगा कर, मैं मैं भी साथ देना चाहती हूँ। पर मुझे कोई जरूरत नही है, इसकी क्योंकि जो वर्तमान काल में मैं हूँ इसमें मुझ से यह कोई सवाल नही करेगा कि तुम नौकरी करना ही क्यूँ चाहती हो?

जब यह सवाल ही नहीं रहेगा तो फिर बवाल ही क्यों होगा। मूझे इतना ही कहना है कि हम किसी पर बोझ नही है।

हमें बस मौका चाहिए इस बात को साबित करने के लिए कि नौकरी के क्षेत्रों में हमारा खुद का भी एक स्थान है। अपनी खुद कि पहचान है।

औरतो को यह एक स्थान देख कर, मूझे ऐसा लगता है मैं तो आने वाले कल मे कामयाब होऊगी, अगर वर्तमान काल मे होती तो, मैं उन औरतो में से होती जो समाज से लड़ कर खुद को साबित कर पाती की यह क्षेत्र हमारा भी है।

• संदेश/संसार – और आखिरी बात यह भी सुन ले जाईए। मेरा एक अनुभव है, मैं जब स्कूल में थी। तो मेरे सर ने हम लड़कियों को बताया था एक बात। उनके जीवन काल में एक लड़की उनकी क्लास पढ़ने आती थी। उसके सर के बाल नहीं थे। उसने रेजर से अपना सर ही गंजा कर लिया तो सर ने पूछा कि क्यों ऐसे किया। तो उसने बताया कि मेरे माता-पिता जो थे न, वह मेरी जबरदस्ती शादी करवा रहे थे। तो मैंने क्या किया कि अपने सारे सर के बाल काट ली। कि कोई भी लड़का उसको पसंद नहीं करे। और उसकी न हो। तब उन सर ने हमलोगों एक बात बोली थी।

"कि कौन कहता है कि कफन सफेद होता है। मैंने तो लाल जोड़े में कितने को दफन होते हुए देखा है।"

बस वह कितना ही कहना चाहते थे, कि ~~आदि~~ शादी कि भी एक उम्र होती है। और अगर कोई पढ़ना चाहती है तो, उसे कोई पढ़ने क्यों नही देता। सारे वसूल, नियम सिर्फ हम लड़कियों पर ही लागु होता है क्या?

बस आज की इस उपनासयम में यही कहना है, फिर कभी मिलेंगे कोई और ऐसी- ऐसी ~~बिव~~ विषय के बारे मे जानकारी के साथ - साथ समझाती भी बताने के लिए।

[redacted]